4

उठो रे सुज्ञानी जीव...

उठो रे सुज्ञानी जीव, जिन गुण गावों रे।।टेक।।

निशि तो नसाय गई, भानु को उद्योत भयो।
ध्यान को लगावो प्यारे, नींद को भगावो रे।।1।।
उठो रे सुज्ञानी...

भव वन चौरासी बीच, भ्रमतौ फिरत नीच।
मोह जाल फन्द पर्‌यौ, जन्म मृत्यु पावो रे।।2।।
उठो रे सुज्ञानी...

आरज पृथ्वी में आय, उत्तम जन्म पाय ।
श्रावक कुल को लहाय, मुक्ति क्यों न जावो रे।।3।।
उठो रे सुज्ञानी...

विषयनि राचि राचि, बहु विधि पाप संचि।
नरकनि जायके, अनेक दुख पावौ रे।।4।।
उठो रे सुज्ञानी...

पर को मिलाप त्यागी, आतम जाप लागी।
सुविधि बतावै गुरु, ज्ञान क्यों न लावो रे।।5।।
उठो रे सुज्ञानी .....

हे ज्ञानी जीव! अब जाग्रत हो जाओ और श्री जिनेन्द्र भगवान के गुणों का स्तवन करो।।टेक।।

अज्ञान रूपी अंधकारमयी रात्रि विनष्ट हो गई है और ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हो गया है। अब तुम आत्मा में ध्यानस्थ हो और मोह रूपी नींद को भगाओ।।१।।

चौरासी लाख योनियों के भव रूपी वन में तुम दीनहीन होकर भ्रमण कर रहे हो। मोह जाल में फंसकर जन्म-मरण के कष्ट उठा रहे हो। इसलिये हे ज्ञानी जीव अब मोह नींद से उठो।।२।।

तुमने निगोद से पृथ्वीकाय आदि कई गतियों में भ्रमण करते हुये, महाभाग्य से मनुष्य जन्म में श्रावक कुल प्राप्त किया है तो अब निर्वाण क्यों नहीं प्राप्त करते ? अर्थात् अब मोह नींद से उठकर शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करो।।३।।

तुमने विषय भोगों में रच-पचकर अनेक विधि से पापों का बंध किया है और उसके फलस्वरूप नरक जाकर अनेक प्रकार के दुख भोगे हैं। इसलिये हे ज्ञानी जीव! अब तो जाग्रत हो जाओ।।४।।

तुम पर की संगति का त्याग कर आत्मा की आराधना में लग जाओ। वीतरागी संत हमें आत्मा के उद्धार की सम्यक विधि बता रहे हैं तो उसमें ज्ञान का प्रयोग क्यों नहीं करते ? अतः हे ज्ञानी जीव! अब जाग्रत हो जाओ और जिनेन्द्र भगवान के गुणों का स्तवन करो।।५।।